RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-06
June-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI:https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i06.031

अनुवाद का उद्‌भव और विकास (हिन्दी साहित्य के विशेष संदर्भ में)

प्रेरणा

शोधार्थी यू.जी.सी., नेट (हिन्दी) स्नातकोत्तर, हिन्दी विभाग ति0माँ0भा0वि0, भागलपुर, 812007

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 June 2020

Keywords
लक्षणग्रथ, अनुदित ग्रन्थ, अनुवादक, अनुवाद, न्यू टेस्टामेंट, ओल्ड टेस्टामेंट, गद्यानुवाद, पद्यानुवाद, छायानुवाद, काव्यशास्त्र।

ABSTRACT

विश्व साहित्य में अनुवाद चिंतन की परंपरा पुराने समय से चली आ रही है। प्राचीन युग में जहाँ अनुवाद सम्बन्धी कोई सैद्धांतिक एवं समीक्षात्मक चिंतन स्वतंत्र रूप से नहीं किया गया, वहीं आज पूरे विश्व में अनुवाद विषय से सम्बन्धित सभी पक्षों पर एक सुव्यवस्थित ढंग से चिंतन–मनन करने में उत्साहजनक प्रयास किये जा रहे हैं। आज भारत जैसे बहुभावी राष्ट्र में अनुवाद विषय को एक स्वतंत्र विषय के रूप में मान्यता प्राप्त हो चुकी है। संसार में प्रायः दो हजार वर्षो से निरंतर अनुवाद होते रहे हैं। अनुवाद सिद्धांत अनूदित साहित्य के संदर्भ में ही विकसित एवं पल्लवित हुआ है। अतः अनुवाद चिंतन का विकास समझने के लिए हमें अनुवाद साहित्य का विकास समझना होगा।

अनुवाद की परम्परा का पारंम्भिक विकास यूनान तथा रोम में हुआ। किन्तु अनुवाद के क्षेत्र में रोम यूनान की तुलना में काफी आगे था। इसका मुख्य कारण यह था कि यूनान में केवल बाइबिल की पुरानी पोथी का अनुवाद हुआ जबकि रोम में विभिन्न पुस्तकों का अनुवाद हुआ। अनुवाद के क्षेत्र में अरबों का भी अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अरब में इस्लाम के उदय के साथ ही अनुवाद की गतिविधियाँ आरंभ हो गई थी। अरब के यहवा–अल नहवो ने ईसाई धर्मशास्त्रों का अरबी भाषा में अनुवाद किया। अरबों ने संस्कृत और सिन्धि का भी अरबी मं अनुवाद करवाया।

16वीं शताब्दी म अनुवाद के क्षेत्र में पूरे यूरोप में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति मार्टिन लूथर था। इसने बाइबिल के न्यू टेस्टामेंट और ओल्ड टेस्टामेंट का अनुवाद प्रकाशित किया था।

पश्चात्य अनुवाद सिद्धांत के विकास में लूथर का समकालीन एटीने डोलेट का नाम भी उल्लेखनीय है। इसने अनुवाद के सिद्धांतां पर बड़ा ही वैज्ञानिक निबंध प्रकाशित किया।

इंग्लैण्ड में अनुवाद चिंतन की परम्परा का आरंभ 9वीं शताब्दी में ही हो गया था। किन्तु मूल रूप से इसका विकास 16वीं शताब्दी ने देखने को मिलता है। इस समय लैटिन भाषा के अनेक कवियो और लेखकों के ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद हुआ।

हिन्दी में अनुवाद चिंतन, अंग्रेजी में हुए अनुवाद–चिंतन की अपेक्षा ज्यादा विकसित नहीं है। फिर भी समय–समय पर अनेक साहित्यकारों, अनुवादकों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं।

हिन्दी लेखक शुरू से ही अपने पूर्व अथवा समकालीन साहित्यकारों से प्रभावित होते रहे हैं। यह प्रभाव कही–कहीं अनुवाद के रूप में प्रकट हुआ है।

उदाहरण के लिए महाभारत ने कहा गया है –

''मूकं करोति वाचालं पंगु लबयते गिरिम्।
यत्कृपा तमंह वन्दे परमानन्द माधवम्।।''

इसका छायानुवाद तुलसी ने एक सोरठे में किया–

मूक होई वाचाल पंगु चढ़ई गिरिवर गहन,
जास कृपा सो दयाल, द्रवौ सकल कलिमल दहन।''[1]

हिन्दी साहित्य में ऐसे बहुत से उदाहरण है जो हमें सूर, कबीर, तुलसी, जायसी, रसखान, भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त आदि साहित्यकारों से प्राप्त हा सकते हैं। हिन्दी में हमें वेद, महाभारत, गीता, उपनिषद, बाल्मीकि, कालिदास, भास, भवभ्ति आदि के अनुवाद देखने को मिलते है। गीता के ब्रजभाषा, अवधी तथा खड़ी बोली में अनेक गद्यानुवाद तथा काव्यानुवाद हुए। लल्लूलाल ने भागवत का सुखसागर नाम से अनुवाद किया। कालिदास ने मेघदूत तथा शाकुन्तला के अनुवाद किये। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने संस्कृत में भतृहरि, जयदेव, कालिदास, आदि के रचनाओं के हिन्दी में अनुवाद किए। अंग्रेजी से उन्होंने जॉज वेकन, हर्वट स्पेन्सर, जॉन स्टुअर्ट मिल के ग्रन्थों का हिन्दी में रूपान्तरित किया।[2]

हिन्दी में रीतिकालीन कवियों ने संस्कृत काव्यशास्त्र से संबंधित अनेक ग्रन्थों का हिन्दी में काव्यानुवाद किया। इनमें प्रमुख है – चिंतामणि मतिराम,

RRIJM 2015, All Rights Reserved

केशव, देव तथा भिखारीदास आदि प्रसिद्ध हैं। इन ग्रन्थों को लक्षण ग्रन्थ कहा गया।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का आरम्भ अनुवाद कार्य के महत्व को स्थापित करने से होता है। हमारे राष्ट्रीय नवजागरण की पृष्ठभूमि में अनुवाद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आधुनिक हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक भारतेन्दु तथा उस युग के अनेक लेखक अनुवाद कार्य के महत्व को अच्छी तरह समझते थे। भारतेन्दु ने स्वयं अंग्रेजी, संस्कृत, बांग्ला से प्रचुर मात्रा में अनुवाद किये।

भारतेन्दु के बाद अनुवाद चिंतन की परंपरा को आगे बढ़ाने का श्रेय आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को है। द्विवेदी जी ने अनेक ग्रन्थों का स्वयं अनुवाद किया? और अनुवाद सिद्धांत से संबंधित अपने विचार भो व्यक्त किए। द्विवेदी जी के अनुसार – ''शब्दानुवाद से भावानुवाद अच्छा होता है। भाव से प्रधान है, शब्द स्थापना गौण। शब्दों का प्रयोग तो केवल भाव प्रकट करने के लिए होता है, अतएव भाव प्रदर्शक अनुवाद ही उत्तम अनुवाद है।''[3]

हिन्दी में अनुवाद–चिंतन को परम्परा को एक सशक्त आधार प्रदान किया – आचार्य रामचन्द्र शुल्क ने तो दूसरो ओर हिन्दी अनुवाद चिंतन परम्परा की परिपक्वता और स्थायित्व प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य हरिवंश राय बच्चन ने किया।

आचार्य शुक्ल को प्रायः हम उच्चकोटि के आलोचक, इतिहासकार तथा निबंधकार के रूप में भी जानते हैं, किन्तु इन सबके साथ–साथ वे उच्च कोटि को अनुवादक एवं अनुवाद चिंतक भी थे। उनके अनूदित ग्रन्थ है मेगास्थनीज का भारतवर्ष वर्णन 'द इण्डिका' एडेम्स के प्लेन लिविंग हाइ थिंकिंग का आदर्श जीवन नाम से, हैकल के रिडल ऑफ यूनिवर्स का विश्व प्रपंच नाम से, अनाल्ड के लाइट ऑफ एशिया का बुद्ध चरित नाम से। इन सभी अनुवादों के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि शुक्ल जी शब्दानुवाद के अपेक्षा भावों के अनुवाद को ठीक मानते थे। उनका यह मानना है कि स्त्रोत भाषा का प्रभाव लक्ष्य भाषा पर नहो पड़ना चाहिए। उनका कहना था कि अनुवाद में मौलिक लेखन जैसा प्रभाव हाना चाहिए।

एक स्थान पर वे लिखते हैं – 'कौन सा वाक्य किस अंग्रेजी वाक्य का अक्षरशः अनुवाद है, इसका पता लगाने को जरूरत किसी को न होगी। उन्होंने अपने अनुवादों में पूरी तरह से मूल का अनुकरण किया है, किन्तु कुछ अपवादों में पूरी तरह छूट भी ली है। कहीं–कहीं तो वाक्य या पूरे अध्याय तक को छोड़ दिया है।

हरिवंश राय बच्चने ने बटलर ईडस के 101 स्फुट कविताओं का 'मरकत द्वीप का स्वर' नाम से अनुवाद किया। 'यूथ एंड ऐज' कविता का 'जवानी और बुढ़पा' नाम से बच्चन जी द्वारा किया गया अनुवाद द्रष्टव्य है –

''यह जवान था,
परेशान जब जग करता था,
गुस्सा होकर चिल्लाता था।
रूखसत होते मेहमान का
अब यह दुनिया
मीठी–मीठी बाते कहकर
खिसकाता है।''[4]

बच्चन जी के लिए मौलिक सृजन और अनुवाद से मिलने वाला सुख एक जैसा ही प्रभाव रखता है। अनुवाद के संबंध में उनका मत था कि अनुवाद अभिव्यक्ति क्षमता में वृद्धि करता है। उनके अनुसार अनुवाद की चरम सफलता यही मानी गई है कि वह अनुवाद ने मालूम होकर मौलिक रचना प्रतीत हो, जिस अनुपात में यह अनुवाद मौलिक प्रतीत हो या न हो उस अनुपात में उसे सफल माना जा सकता है।

बच्चन जी सृजनात्मक साहित्यक के अनुवाद के संबंध में शब्दानुवाद की अपेक्षा भावानुवाद पर ही अधिक बल देते हैं। बच्चन जी शब्दानुवाद की कमियों को जानते थे, इसलिए फिटज्जेराल्ड के भावानुवाद पर डटे रहे। उन्होने अनुवाद की भूमिका में इसके पक्ष में लिखा है – अपने अनुवाद के विषय में मुझे केवल इतना ही कहना है कि मैं शब्दानुवाद करने के फेर में नहीं पड़ा भावों को ही मैने प्रधानता दी है।''[5] उनका मानना है कि सफल अनुवाद वह है जिसमें अनुवादक का व्यक्तित्व भी अपनी झलक दिखाता रहे। बच्चन जो छन्द और भाव में घनिष्ठ संबंध का स्पष्ट करते हुए कहते हैं – मेरा अनुवाद रूबाई छन्द में हो सका। मुझे यह स्वीकार करने में संकोच नहीं है कि रूबाई छन्द छोड़ देने से कविता की भावभिव्यंजना अवश्य कुछ कम हो गई है।

इसी परंपरा में रामधारी सिंह दिनकर का भी महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने 'सीपी और शंख' तथा 'धूप छाँव' आदि का अनुवाद किया है। वे मूल के अधिकाधिक निकट अनुवाद के समर्थक है। सीपी और शंख की भूमिका में वे लिखते हैं – ''कविता के अनुवाद की दो पद्धतियाँ अब तक देखने में आयी है – एक प्रद्धति अनुवाद को मूल से अधिक निकट रखने का आग्रह करती है और सच पूछिये तो अनुवाद को सही प्रणाली वहो मानी जानी चाहिए।''[6]

हिन्दी अनुवाद चितन परम्परा में उपर्युक्त अनुवाद चिंतको के अतिरिक्त अन्य विद्वानों ने भी अपना

योगदान दिया है, जिसमं – डॉ0 नगेन्द्र, डॉ0 गागी गुप्त, प्रभाकर माचवे, अमृत राय, विष्णु प्रभाकर, भोलानाथ तिवारी, डॉ0 रीतिरानी पालीवाल, डॉ0 रामविलाश शर्मा, डॉ0 कैलाशचन्द्र भाटिया आदि।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी अनुवाद चिंतन की परंपरा की वर्तमान स्थिति अच्छी है और भविष्य में इसके विकास की अनेक सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। यह भी सच है कि वत्तमान में ज्यादातर अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किए जा रहे हैं। आज जरूरत है भारतीय भाषाओं में अनुवाद को बढ़ावा देने की। इसमें संदेह नहीं कि विश्व साहित्य के अनुवादों से हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं की नवीन दृष्टि प्राप्त हुई और हिन्दी साहित्यकारों के रचना संसार को विस्तृत आयाम मिला।

संदर्भ सहायक सूचि ग्रन्थ

1. दास, तुलसी : रामचरितमानस – बालकाण्ड
2. नजीर, डॉ0 आरिफ : अनुवाद सिद्धांत और स्वरूप
3. कुमार संभव की भूमिका, पृष्ठ–3
4. बच्चन, हरिवंश राय : मरकत द्वीप का स्वर, पृष्ठ–103
5. खैय्याम की मधुशाला की भूमिका, पृष्ठ–66
6. तिवारी, डॉ0 भोलानाथ : अनुवाद विज्ञान, पृष्ठ–22

RRIJM 2015, All Rights Reserved